हे मानव 'मन' को तालीम दो!!!

आप स्वर्ग में जायेंगे या फिर नर्क में? मृत्यु के बाद वैकुण्ठ मिलेगा या मुक्ति? ऐसा प्रश्न साधकों के मन में निरंतर घूमता रहता है, तो उनका जवाब यह है कि स्वर्ग और नर्क ये आपके पास हैं, कोई अद्भुत शक्ति या दैवी शक्ति आपको स्वर्ग में या नर्क में नहीं ले जा सकती बल्कि उसकी 'मास्टर-की' आपके पास है।

यह स्वर्ग और नर्क की 'मास्टर-की' आपके अपने 'मन' में है। यह मन को योग्य दिशा दे, तो मानव जीवन के अंत में स्वर्ग प्राप्त कर सकता है, और मन को जीवन भर झूठे राह पर दैड़ाते रहे तो यही मन आपको नर्क की ओर ले जाता है।

- ब्र. कु. गंगाधर

कोई ऐसा भी कह सकता है कि यह स्वर्ग और नर्क, मानव की गति उसके मृत्यु के बाद होती है। अच्छे मार्ग पर चलने वाले सुखी होते हैं और कूमार्ग पर चलने वाला अंत में तबाह होता है।

ऐसा भी हो सकता है कि विपरीत मार्ग पर चलने वाला थोड़ी देर सुख भोग सकता है। दुनिया की दृष्टि से वो कामयाब लग सकता है, परंतु उसमें दो बाते दिखाई पड़ती हैं। एक तो अपार सुख-समृद्धि में भी झूठे मार्ग पर चलने वालों को आत्मा सतत् सचेत करती रहती है। मनुष्य के कर्मों की सबसे बड़ी अदालत तो उसके मन में ही होती है। उनका मन उन्हें निरंतर सचेत करता रहता है। इसीलिए निष्पाप मानव जैसे आनंद की अनुभूति जीवन में कोई कर नहीं सकता। और उनके जैसे आराम की नींद कोई भोग नहीं सकता।

दूसरी ओर उसके द्वारा किये गए बुरे काम का परिणाम उसके जीवन में ही मिल जाता है। इसमें रावण या हिटलर का भी समावेश होता है और अन्यानेक कुकर्म कर कारावास में सड़ने वाले लोगों का भी समावेश होता है।

एक अर्थ में देखें तो स्वयं आत्मा का सम्बन्ध मन के साथ है और मन का सम्बन्ध इन्द्रियों के साथ है। आपका मन इन्द्रियों को आज्ञा देता है, और इन्द्रियां उसके अनुसार कार्य करती हैं। मन में काम जगे, तो वो व्यक्ति काम तृप्ति के लिए प्रयत्न करता है। मन में लोभ जगे तो मंथरा के मुआफिक अपना लोभ सिद्ध करने के लिए मन कैकेयी की तरह कावा-दावा रचता है।

इसका अर्थ ये होता है कि मन राजा है, इन्द्रियां गुलाम हैं। राजा गुलाम को जिस तरह हुक्म दे उसी तरह गुलाम काम करता है। ये कैसी मजे की बात है कि अदृश्य मन दृष्य इन्द्रियों पर प्रचंड आधिपत्य रखता है। इसीलिए मन की दावेदारी के कारण इन्द्रियों द्वारा होते दुष्कर्मों को देख क्रिश्चन धर्म के 'न्यु टेस्टमेन्ट' (नया करार) में 'मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ' ऐसा कहा गया।

मन ही मनुष्य का सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनो बना सकता है। जहां-जहां मन जाता है, वहां आत्मा जाती है। उसी के परिणाम स्वरूप व्यक्ति की आत्मा मलीन बनती है।

कवि प्राणनाथ ने उनकी एक छोटी सी पंक्ति में सुंदर बात कही है।

'मन ही बांधे मन ही खोले।
मन तम मन ही उजास री।।

''मनुष्य को मन ही बांधता है और मन ही मुक्त करता है। मन ही अंधकार है तो मन ही प्रकाश है।''

फिर यह मन द्विधाओं का सर्जन करता है। यदि द्विधाओं को याद करें तो दुर्योधन का स्मरण होता है। वो कहता है कि 'मैं धर्म को जानता हूँ, लेकिन धर्म को आचरण में नहीं ला सकता। कौनसी बात उसे धर्म के आचरण से दूर रखती है? कौनसी बात उसे सत्कर्मों से दूर रखती है, वह है उसका मन और मन में बसी 'राज्यलालसा'।

इसीलिए तो कवि दयाराम ने कहा है कि 'जो मन में प्रपंच होगा, तो उस मन में भगवान नहीं होगा, और जिस मन में भगवान बसेगा, उसमें प्रपंच नही होगा'।

सबसे महत्व की बात है मन की स्थिरता। मन स्थिर कैसे रह सकता है? उसके लिए इन्द्रियों को विषयों के संयोग से अलग रखना पड़े। विषयों का संयोग होने से ही मन क्षुब्ध होता है, और क्षुब्ध मन ही संसार रच देता है। तो फिर किस तरह मन के साथ बर्ताव करें? इसके सम्बन्ध में श्रीमद्भगवद् गीता (21-9-11) में कहा गया है कि 'मनुष्य आलस्य रहित होकर, आसन तथा श्वास पर विजय प्राप्त कर, वैराग्य और अभ्यास के द्वारा स्थिर किये मन को एक लक्ष्य की ओर कर देना चहिए।

इसमें पहली बात मन को आलस्य रहित करने की है। अर्थात् उसे सतत् जागृत रखने की है। जैसेकि मन में अहंकार जागता है तो

- शेष पेज 8 पर

किसी का नुक्स निकालेंगे तो वो नुक्स हमारे अंदर घुस जायेगा

जिसका दिल ठीक है, उसका दिमाग भी ठीक है। अगर दिल थोड़ी ठीक नहीं है तो दिमाग भी ठीक नहीं है, भारी है। दिल में बाबा है तो कोई बात नहीं, यह मन्त्र जादू का काम करता है। अभी पुरानी बात जैसे कोई कहता है, प्लीज़ एक भी बात, कल की बात जो काम की नहीं है वो याद न आये। जो बताया है, बात याद आयी तो बाबा याद नहीं आयेगा। जितना ही प्यारा है उतना ही न्यारा है। सिखाके, समझाके न्यारा बन जाता है। फिर हमारी जो धारणायें हैं अपने पुरुषार्थ करने के लिए, तो उसमें हम बाबा को साथी बनायेंगे। सबके साथ पार्ट प्ले करने में साक्षी हो रहेंगे। बुद्धि में धारणा ठीक होगी। उसमें अटेन्शन खिंचवाने के लिए बाबा जो नियम बनाके देता है, उस पर चलने वाले और चलाने वाले वण्डरफुल हैं।

कई बार कई स्थानों पर आना-जाना होता है तो अपने आप टाइम पर खींचता है, जबकि मैं तो घड़ी (हथकड़ी) नहीं पहनती हूँ। फिर भी जैसे अमृतवेले का, ट्रैफिक कंट्रोल का योग कोई इत्तेफाक से मिस किया होगा। तो नियम का पालन करना भी हमारी सेफ्टी है। अनायास ही हमको साइलेंस में रहने के लिए बहुत अच्छा लगता है। हम निर्विकारी पूज्य बन रहे हैं, यह निश्चय और नशे की कमाल है। निमित्त मात्र समर्थ संकल्प से कई कार्य हो रहे हैं, हुआ ही पड़ा है, पर निमित्त बाबा दिखाता है कि संकल्प ऐसी क्वालिटी वाला रखेंगे तो तुम्हारी कमाई है। तो जी बाबा करके करते जाओ, कभी भी यह नहीं सोचो कि यह कैसे हो सकता है, या यह नहीं हो सकता है, ऐसे न सोचो, न कहो।

ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा ने जो पालना दी है, जितनी अच्छी गुह्य ते गुह्य, नई-नई बातें रोज़ सुनाता है तो बाबा को क्या कहें, मेरा बाबा या मीठा बाबा या वण्डरफुल बाबा! जो हमारे परिवर्तन के लिए ऐसी बातें हमारे अंदर ऐसी लगा देता है, जो भूल नहीं सकती, मेरा तो यह हाल है। ऐसा किसका हाल है, बाबा ऐसी बात सुनाता है, बाबा की बात ही कमाल का काम करती है। जो अपने में उम्मीदें नहीं थीं, इतना मेरी कोई स्थिति बन सकती है, आज मुझे कई प्राइवेट बताते हैं, आज मुझे उम्मीदें हैं, मेरी अवस्था बन सकती है। इसमें है अपनी घोट तो नशा चढ़े। ज्ञान को मंथन करो, प्रैक्टिकल में लाने के लिए नशा चढ़ता है, परिवर्तन आता है। नशे में परिवर्तन आता है, न भी चाहें, तो भी परिवर्तन आता है। एक ही नशा है, नारायण समान बनने का, इसी में फायदा है, खुशी का। बाकी देह-अभिमान वश और कोई भी नशा पीने का, खाने का है तो उसमें नुकसान ही है। पहनने का भी नशा होता है, बाल बनाने का भी, शू पहनने का भी... किसी के पाँव में कभी कोई चप्पल होगा, कभी कोई चप्पल होगा। यह मेरे को अच्छा नहीं लगता है, इसलिए एक ही चप्पल है। जितना बुद्धि को सिम्पल बनायेंगे, प्रैक्टिकल लाइफ में लायेंगे, अच्छा सैम्पल बनेंगे।

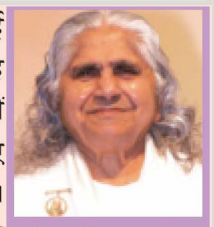
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

जितना यज्ञ में सफल करेंगे, उतना बाबा देने के लिए बंधायमान है। सेवास्थान बाबा के हैं, सेवा करने वाले बाबा के बच्चे हम निमित्त सेवाधारी हैं। कई हैं निमित्त बने हुए का भी नुक्स निकालते हैं, किसी का नुक्स निकालेंगे तो वो नुक्स हमारे अंदर घुस जायेगा इसलिए सम्भालो अपने आपको, नहीं तो फिर कर्म कूटना पड़ेगा। तो बहुतकाल से श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा ऐसा हो, जो इन्ट्रेस्ट पर इन्ट्रेस्ट मिलता रहे। ईश्वरीय स्नेह, रूहानी दृष्टि में ईश्वरीय स्नेह भर जाता है, जो हमको प्युरीफाई कर देता है। बाबा की दृष्टि हमको क्लीन कर देती है। अभी हमारी अंतिम स्थिति जैसी बनेगी तो अंत में भी गैरन्टी रहेगी। लेकिन ऐसी बनेगी नहीं, बनानी होगी। इसके लिए बाबा लाइट बना करके, माइट भी दे रहा है। तो अपने को और बाबा को देखो तो सब अच्छा है। ऐसी जीवन जीना सीखना हो, सच की राह पर चलना हो, बाबा के दिल पर बैठना हो तो एक दो से प्रेरणा मिले।

मुरली को लगन से पढ़ो, सारे सवालों के जवाब मिलेंगे

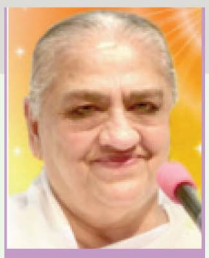
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

ब्राह्मण जीवन का जीयदान है - मुरली। ब्राह्मण जीवन की श्रीमत है - मुरली क्योंकि बाबा कहते हैं श्रीमत पर चलो, तो वह श्रीमत कौनसी है? क्या बड़ी दादी कहती, वही श्रीमत है? हमारी निमित्त टीचर जो कहती है, वही श्रीमत है, क्या श्रीमत है? लेकिन यह हमारी दादी जी हैं या निमित्त टीचर्स हैं, वह भी आपको अगर राय देंगे तो किस आधार पर देंगे? मुरली के आधार पर ही देंगे ना! बाबा ने यह कहा है, ऐसे ही कहेंगे ना! मैं आपको ऐसे कहती हूँ कि यह करो, यह तो नहीं कह सकते ना! बाबा ने ऐसे श्रीमत दी है, तो वह श्रीमत हमारी है - मुरली। और आप सबको अनुभव होगा कि मुरली की श्रीमत में इतनी ताकत है, अगर आपको कोई भी दवाई मन्सा की, वाचा की चाहिए, कर्मणा में योगी बनने की चाहिए, सम्बन्ध-सम्पर्क में सबसे यथार्थ चलन में चलें, सम्बन्ध में आयें, कोई भी दवाई अगर आपको चाहिए, तो कोई भी मुरली आप हाथ में उठा लो। उसी मुरली में वह मिल जायेगी। तो मुरलियों की बुक या मुरलियों की कुछ कॉपीज़ हर एक को अपने पास रखनी चाहिए, यह हमारी बहुत आवश्यक चीज़ है।

तो यह मन के बीमारियों की सब दवाइयां मुरली में हैं। किसी भी प्रकार के सवालों का जवाब मुरली में मिल सकता है। मन चंचल है, विचलित है उसको अचल बनाने के लिए अगर आप कोई भी मुरली विधिपूर्वक और लगन से पढ़ो तो आपको सब सवालों का जवाब मिल जायेगा।

आप भाग्यवान हो जो यह थोड़े से दिन आपको बाबा ने कमाई जमा करने के लिए दिये हैं क्योंकि फिर भी वहां तो वायुमण्डल दूसरा यानि बाहर का होता है। यहां के वायुमण्डल में तो जहां जाओ वहां एक ही बात है। यहां तो एक ही काम है अपना खज़ाना जमा करना और क्या काम है! जो ड्यूटी पर आते हैं वह अपनी ड्यूटी पर जाते हैं, बाकी आप लोग जो रिफ्रेश होने आते हैं, उनको तो और कोई काम नहीं है। और बाबा ने इतना अच्छा सहज तरीका सुनाया है, मुरली सुनी तो समझो मन की खुराक खाई। जैसे तन के लिए नाश्ता खाते हैं तो ताकत आती है ना! ऐसे मन को मुरली सुनने से रिफ्रेशमेन्ट मिलती है।

यह बुज़ुर्ग मातायें भी हमारे विश्व विद्यालय का श्रृंगार हैं, माताओं को देख करके बाबा इतना खुश होता था! मातायें कहती बाबा हम पहले आते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन बाबा कहता अभी वह ड्रामा तो बदल नहीं सकता। वह तो ड्रामा में लिपट गया ना इसीलिए बाबा कहता था, माताओं को मैं फ्री देता हूँ। खास माताओं के ऊपर रहम करता हूँ कि माताओं को इतनी प्वाइंट्स याद रखने की ज़रूरत नहीं है। माताओं को और कुछ याद भी न रहे तो कोई बात नहीं, तुमको माफ कर दूंगा, कुछ नहीं पूछूंगा। ड्रामा क्या है बताओ, 84 जन्म क्या है? यह सब तुमको फ्री है, इतनी मेहरबानी बाबा माताओं के ऊपर करता है। बाबा कहता था चलो, एक अक्षर तो याद रख सकते हैं। ऐसे पोत्रे-धोत्रे की बात घण्टों बैठके सुनायेंगी लेकिन मुरली की प्वाइन्ट थोड़ी गुह्य होती है इसीलिए भूल जाती है। तो बाबा ने कहा चलो भूल जाती है, कोई हर्जा नहीं लेकिन एक अक्षर तो याद रख सकती हो कि नहीं? वह एक अक्षर है - बाबा। बस। यह याद रख सकते हो? राम, राम, राम तो बहुत बारी किया लेकिन वह मरा, मरा, मरा हो गया। लेकिन बाबा, बाबा शब्द तो याद रख सकती हो कि नहीं?

बाबा कहता है जब बाबा शब्द बोलेंगे, तो बाबा क्या देता है, वह भी याद आयेगा ना! बाबा से प्यार क्यों होता है? किसी को भी पिता से प्यार क्यों होता है? वर्सा मिलता है, तभी प्यार होता है। तो बाबा कहते हैं जब बाबा शब्द याद रखेंगी तो वर्सा तो याद आयेगा ही। और वर्सा क्या याद आयेगा? हम प्रिन्स-प्रिन्सेस बनेंगी। बाबा कहने से पवित्रता का वर्सा आपको अवश्य मिलेगा क्योंकि बाबा देता ही पवित्रता है और देता ही क्या है! इसीलिए एक बाबा शब्द कभी नहीं भूलो। बस। बाबा कहा बेड़ा पार। यह क्या मुश्किल है? बाबा की श्रीमत तो याद आयेगी ही। मरने तक बाबा शब्द मुख से निकले। बस।